प्राक्कथन

मनुष्य को परमात्मा ने संगीत के बेशकीमती उपहार के साथ नवाज़ा है। संगीत एक परिवर्तनशील कला है जो प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक संगीत के अलग–अलग रूपों में मानवीय भावों के साथ मिल कर आनन्द की अनुभूति करवाता रहा है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो 11वीं सदी में मुस्लिम संस्कृति के भारत आने से भारत की संस्कृति, रहन–सहन, रीति–रिवाज़, खान–पान, साहित्य, दर्शन आदि के साथ–साथ भारतीय संगीत पर भी गहरा प्रभाव पड़ा। मुस्लिम लोग भारतीय भाषाओं को समझ नहीं सके परन्तु वे भारतीय संगीत की स्वरलिपियों से बहुत प्रभावित हुए, और यही प्रभाव भारतीय संगीत से होता हुआ पंजाब की संगीत परम्परा में भी देखने को मिला। जिसके अन्तर्गत पंजाब के संगीत में अरबी–फारसी संगीत का मिश्रण करके अनेकों गायन विधाओं जैसे कव्वाली, कौल, कलबाना, रंग, काफी, तराना, ख्याल, मनकबत, ग़ज़ल आदि गायन विधाओं का उत्पन्न किया। सूफी संतों और फकीरों द्वारा आरम्भ की गई सूफी संगीत परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए अलग–अलग सूफी गायकों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। सूफी संगीत के क्षेत्र में असंख्य कलाकार हुए हैं, जिन्होंने सूफी संगीत को जनसाधारण तक पहुंचा कर प्रचारित व प्रसारित किया जिसमें सूफी फकीरों की दरगाहों पर लगने वाली महफिल ए समाअ, मीडिया, टी.वी. चैनल्स, सोशल मीडिया आदि ने सूफी संगीत के प्रचार प्रसार के माध्यम के रूप में मुख्य भूमिका निभाई।

सूफीयाना संगीत के प्रचार प्रसार मे वर्तमान पंजाब के कलाकारों के योगदान को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी द्वारा **''सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में पंजाब के कलाकारों का योगदान''** विषय का चयन किया गया है।

शोधार्थी द्वारा शोध–प्रबन्ध को कुल छः अध्यायों में बाँटा गया है जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार है।

प्रथम अध्याय **'पंजाब की संगीत परम्परा : परिचयात्मक अध्ययन'** में पंजाब के शाब्दिक अर्थ, पंजाब की भूगौलिक स्थिति, पंजाब की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, पंजाब के संगीत का इतिहास, पंजाब प्रदेश की रियासतों एवं घराना परम्परा, पंजाब के संगीत की विभिन्न सांगीतिक धारा, भक्ति संगीत आधारित विभिन्न विधाओं का वर्णन किया गया है।

द्वितीय अध्याय में **'सूफी संगीत : उद्भव एवं विकास'** पर प्रकाश डाला गया है जिसके अन्तर्गत सूफी शब्द का अर्थ, सूफी मत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, भारत में सूफियों का आरम्भ, पंजाब में सूफी परम्परा का आरम्भ, सूफी सिलसिले या सम्प्रदाओं का वर्णन किया गया है।

तृतीय अध्याय **प्रमुख सूफी फकीर एवं सूफियाना गायन शैलियां** पर आधारित है जिसमें प्रमुख सूफी फकीरों के बारे में बात करते हुए पंजाब के प्रमुख सूफी फकीरों के जीवन परिचय के बारे में जानकारी दी गई है और इन सूफी फकीरों द्वारा रचित रचनाओं से उत्पन्न हुई विभिन्न सूफी संगीत की शैलियों का वर्णन किया गया है।

अध्याय चतुर्थ **'सूफी संगीत के प्रचार हेतु माध्यम'** में दरगाहों के शाब्दिक अर्थ, पंजाब की प्रसिद्ध दरगाहों का विवरण, ग्रामीण सभ्याचारक मेले व निजी महफिलों, शिक्षण संस्थाओं, गैर–शिक्षण संस्थाओं का वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय **'सूफीयाना गायकी के प्रचार प्रसार में विभिन्न विधाओं के कलाकारों का योगदान'** में सूफीयाना गायन के अन्तर्गत प्रसिद्ध कलाकरों का जीवन परिचय व पंजाब के प्रसिद्ध कलाकारों से शोध कार्य सम्बन्धित किए गए साक्षात्कारों का वर्णन, इसी की भांति महिला कलाकारों एवं सूफी ढाडी कलाकारों का सूफियाना गायकी के प्रचार प्रसार में योगदान को इस अध्याय में शामिल किया गया है।

छष्ठम अध्याय **'संगीतक विद्वानों का सूफियाना गायन प्रति दृष्टिकोण एवं योगदान'** में सूफियाना गायन के अन्तर्गत संगीतक गुणीजनों से की गई भेंटवार्ताओं को प्रस्तुत किया गया है और प्रसिद्ध सूफी कलामों का वर्णन किया गया है जिसको विभिन्न कलाकारों ने अपनी गायकी अनुसार निभाया है, इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध सूफी कलामों की स्वरलिपियाँ चाहे वह मुद्रित रूप से प्राप्त की गई हों चाहे शोधार्थी द्वारा स्वयं बनाकर, प्रसिद्ध सूफी कलामों की लोकप्रियता को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इसके पश्चात् **'अध्ययन का सारांश एवं निष्कर्ष'** को प्रस्तुत किया गया है। इसके पश्चात **शोध सम्बन्धी भावी सम्भावनाओं** को प्रस्तुत करते हुए आने वाले शोधार्थियों के लिए शोध सम्बन्धी विषय रखने का प्रयास किया गया है।

अन्त में परिशिष्ट 1 (प्रश्नावली), परिशिष्ट 2 (साक्षात्कार सूची) आदि को दर्शा कर अंत में संदर्भ ग्रन्थ सूची का संलग्न किया गया है।